शुष्क बागवानी समाचार

भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

बीछवाल-बीकानेर-334006 (राजस्थान)

अंक 20, क्रमांक- 01 जनवरी-जून, 2020

निदेशक की कलम से .....

मुझे भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजस्थान) के इस छः मासिक समाचार–पत्र को आप तक लाने में बहुत प्रसन्नता हो रही है। अपनी स्थापना के बाद से ही, यह संस्थान देश के गर्म शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में बागवानी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों के संचालन हेतु समर्पित है। संस्थान गर्म शुष्क और अर्ध–शुष्क परिस्थितियों में प्रचलित जैविक और अजैविक तनाव के तहत गुणवत्तायुक्त उत्पादन के साथ उच्च उपज देने में सक्षम शुष्क बागवानी फसलों की किस्मों और उत्पादन प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रूप से गतिशील है। संस्थान का दीर्घकालिक लक्ष्य देश के गर्म शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों की बंजर और अनुत्पादक भूमि को उत्पादक बनाने के साथ लाभप्रद हरित बागवानी क्षेत्र में परिवर्तित करना है ताकि इन क्षेत्रों के ग्रामीण निवासियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके। इस प्रकार, संस्थान विशिष्ट बागवानी प्रौद्योगिकियों के विकास के द्वारा देश के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों के किसानों और हितधारकों की सेवा के लिए, विशेषकर शुष्क बागवानी तकनीकों, नए जननप्रकारों/फसलों के विकास, देश के शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों की प्रतिकूल जलवायु स्थिति के अनुरूप व्यवहार्य कार्ययोजनाओं के विकास, आदि के लिए समर्पित है।

परन्तु इस समाचार पत्र की अवधि के दौरान समय कठिन और चुनौतीपूर्ण रहा। प्राणघातक बीमारी कोविड–19 के विश्वव्यापी प्रसार और संस्थान में टिड्डियों के भीषण हमले ने इस अवधि के दौरान संस्थान के अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों /गतिविधियों के संचालन को प्रभावित किया। सरकारों के अनुदेशों /दिशा–निर्देशों के अनुसार, संस्थान ने कोविड–19 के दुष्प्रभाव से बचने हेतु संस्थान में, किसानों, गरीब लोगों /मजदूरों, और अन्य के लिए कई गतिविधियाँ / एहतियाती कदम उठाए / आयोजित किए।

टिड्डियों ने संस्थान के प्रायोगिक प्रखण्डों, परिसर और संस्थान के आस–पास के क्षेत्रों में कई बार आक्रमण किया। यद्धपि, संस्थान के वैज्ञानिक, प्रशासनिक और तकनीकी कर्मचारियों सहित सभी कर्मचारियों, एसआरएफ, वाईपी और प्रक्षेत्र सहायकों ने कड़ी मेहनत की और संस्थान परिसर से घातक टिड्डियों के झुंड को भगाकर संस्थान को बड़े नुकसान होने से बचाया। यद्धपि, समय चुनौतीपूर्ण था, फिर भी, संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने कड़ी मेहनत की और हमेशा की तरह संस्थान के सभी कार्यक्रमों और गतिविधियों /कार्यों को सुचारू रखने का प्रयास किया।

इतने कठिन समय के दौरान भी, फल और सब्जियों के कुछ उन्नत जननप्रकार जैसे– बेल में सीएचईएसबी–16 (आईसी–0629385), सीएचईएसबी–21 (आईसी–0629386), सीएचईएसबी–27 (आईसी –06293867) और सीएचईएसबी–29 (आईसी –0629388), बैंगन का सीआईएएच– 22–6–1, लौकी (गोल आकार) का एलएस–4 x एलएस 3– 2 तथा सेमफली की सीएचईएसआईबी–07 और सीएचईएसआईबी–10, आदि की पहचान और मूल्यांकन किया गया। बेर में चंदवा (छत्र) स्थापत्य प्रबंधन, अनार में फूल नियमन, आंवला कैंडी का जैव पोषक सुदृढ़ीकरण, अमरूद में द्रुत पौध स्थापना और मूल्यांकन तकनीक, जंगल–जलेबी में कलिकायन तकनीक सहित अन्य तकनीकियां भी इस अवधि के दौरान विकसित की गयी।

किसानों के कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण, किसान–सलाह, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, विधि प्रदर्शन और संवाद, परिचर्चा, अनुसंधान–विस्तार–किसान –चर्चा बैठकें, किसानों के खेतों का दौरा, महिला सशक्तिकरण गतिविधियां, उन्नत बीज बिक्री /वितरण दिवस का आयोजन और अन्य दिवस, सप्ताह, सामग्री तथा तकनीकी साहित्य का वितरण, आदि, गतिविधियां इस अवधि के दौरान की गयी। संस्थान में चल रही अनुसूतिज जाति उप योजना के अंतर्गत समय–समय पर अनुसूचित जाति की महिलाओं और पुरूषों को प्रशिक्षण, सामग्री तथा तकनीकी साहित्य का वितरण, आदि कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

कोविड–19 की लॉकडाउन अवधि से पहले, अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्रीय फल समन्वित अनुसंधान परियोजना की टीएनएयू, कोयंबटूर (तमिलनाडू) में अनुसंधान वैज्ञानिक समूह की 24वीं वार्षिक बैठक, अनुसंधान सलाहकार समिति, संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति तथा डस योजना के निगरानी दल की बैठक जैसी कुछ महत्वपूर्ण बैठकें भी आयोजित की गयी।

पिछले छह महीनों के दौरान संस्थान के प्रमुख कार्यक्रमों / गतिविधियों और उपलब्धियों के साथ–साथ संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र और कृषि विज्ञान केन्द्र (गुजरात) की प्रमुख गतिविधियों को इस समाचार पत्र के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

पीएलसरोज

(पी. एल. सरोज)
निदेशक

अनुसंधान ज्योति

मुख्यालय, बीकानेर

● **बेर में चंदवा (छत्र) स्थापत्य प्रबंधन :** गर्म शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में पहली बार भाकृअनुप–केशुबासं, बीकानेर ने बेर में पौधा चंदवा (छत्र) स्थापत्य प्रबंधन पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया है। इसमें बेर की गोला, थाई बेर, गोमा कीर्ति और थार सेविका किस्मों को चार सधाई (ट्रेनिंग) प्रणाली यानि वाई आकार, लता प्रकार, टेलीफोन प्रकार और नियंत्रण पर लगाया गया। पौध दूरी 6 x 6 मी. रखते हुए इसे बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली पर लगाया गया। सभी किस्मों में, पौध रोपण के एक वर्ष के बाद ही फलोत्पादन आरंभ हो गया। आरंभिक दो वर्षों के अध्ययन में पाया गया है कि इन सधाई (ट्रेनिंग) प्रणालियों के अंतर्गत उगाए गए बेर में, नियंत्रण की अपेक्षा फलोत्पादन और गुणवत्ता अच्छी थी। बेर में कांटे होने के उपरांत भी इस प्रकार की सधाई प्रणालियों के अंतर्गत, नियंत्रण की अपेक्षा फल तुड़ाई सरलता से हुई। इन सधाई प्रणालियों में लगाए गए बेर के पौधों में प्रति पौधा औसतन 20 किग्रा. उपज दर्ज की गयी। इन सधाई प्रणालियों में से प्रति पौधा उपज के आधार पर 'वाई' आकार में साधे गये पौधे सबसे बेहतर रहे **(पी. एल. सरोज, डी. के. सरोलिया और बी. डी. शर्मा)।**

● **अनार में फूल नियमन का मानकीकरण :** गर्म शुष्क जलवायु परिस्थिति में अनार में फूलों के नियमन का मानकीकरण किया गया। इसमें जून माह में सिंचाई को रोकना + छंटाई+ 2 मिली/ली ईथरल का छिड़काव+ डीएपी 5ग्रा/ली. के मिश्रण के उपचार को अन्य सभी उपचारों से बेहतर पाया गया जिसमें विपणन योग्य फलोपज, लागत : लाभ अनुपात और सकल लाभ सर्वाधिक प्राप्त किया गया। अनार की भगवा किस्म के साथ यह तकनीकी बीकानेर जिले के पलाना, सूजासर और कानासर गांवों के किसानों के खेत पर भी प्रदर्शित की गयी जिसमें किसान अधिक फलोत्पादन (12–15 किग्रा/पौधा) के साथ अच्छा लाभ प्राप्त कर रहे हैं और फलों का फटना भी कम से कम (5–10 प्रतिशत) हुआ **(रमेश कुमार, पी. एल. सरोज, और बी. डी. शर्मा)।**

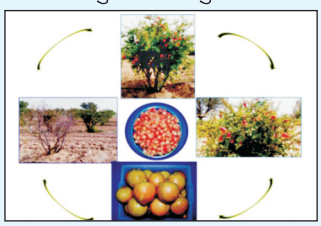

Flower regulation cycle in pomegranate cv. Jalore Seedless

● **बैंगन के उन्नत ''सीआईएएच- 22-6-1 जननप्रकार की पहचान और मूल्यांकन:** इस जननप्रकार के पौधों की वृद्धि मध्यम और कांटेदार है। पौध रोपण के 56–62 दिनों में इसमें विपणन योग्य फल आए। यह फलोत्पादन में मध्यम (16–27 फल/पौधा) है जिसमें विपणन योग्य उपज 2.85–3.72 किग्रा/पौधा/मौसम दर्ज की गयी। इसमें मई–जून माह के 42°–46°.से. तापमान पर भी अच्छे फल प्राप्त किए गये। गर्म शुष्क स्थिति में यह जननप्रकार दोनों मौसम (वर्षा–सर्दी एवं वसंत–गर्मी) में फलोत्पादन करने में सक्षम है **(अजय कुमार वर्मा और डी. के. समादिया)।**

● **आंवला कैंडी का करौंदा सत्व द्वारा जैवसुदृढ़ीकरण :** आंवला कैंडी बनाने के लिए फलों की गुठली निकालने हेतु कुछ देर ब्लांच किया गया। ब्लांच करने से फलों की संवेदनशील जैव सक्रिय योगिक की क्षमता कम हुई। अतः ह्रास हुए पोषक तत्वों की भरपाई करने के लिए आंवला कैंडी को पोषक तत्वों से भरपूर करौंदा सत्व से संसेचन किया गया। करौंदा का रस एंथोसायनिन, आयरन और कई अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारण, ब्लैंचिंग के माध्यम से खोए हुए पोषक तत्वों की भरपाई करने में मदद की और आंवला कैंडी को एंथोसायनिन रंजकता प्रदान करने के माध्यम से उपभोक्ता का ध्यानाकर्षन करने में सहायक हुआ। **(वी. आर. रेड्डी, आर. के. मीणा, एम. के. बेरवाल और रमेश कुमार)।**

क्षेत्रीय केन्द्र, वेजलपुर (गुजरात)

● **बेहतर गुणोंयुक्त लौकी की पहचान:** एलएस–4x एलएस 3–2 के बीच बनाए गए संयोजनों से अलग छांटें और समरूपता के लिए आठवीं संतति में उन्नत किये गये प्रकारों में से एक बेहतर गुणोंयुक्त (गोल प्रकार) लौकी की पहचान की गयी है। इसके पौधे, घने पर्णसमूह के साथ अत्यधिक प्रबल होते हैं, नर और मादा फूल क्रमशः 7 वें और 11 वें गांठों से निकलते हैं। प्रत्येक पौधा लगभग 24–32 मादा फूलों का उद्भव करता है और 57–62 दिनों में तुड़ाई योग्य फल बनते हैं। फल आकार में गोल तथा गूदा क्रीमी–सफेद होता है और प्रत्येक पौधा लगभग 12.91 किग्रा फल उत्पादित करता है **(एल. पी. यादव)।**

बेल के उन्नत जननप्रकारों का मूल्यांकन

सीएचईएसबी-16 (आईसी-0629385) : यह देर से परिपक्व होने वाले समूह (मई के तीसरे सप्ताह) के अंतर्गत आता है, इसमें झुकती हुई शाखाएं, सफेद–हरी फल सतह और मुड़ी हुई पंखुड़ियां, इसके पहचान के लक्षण हैं। दसवें वर्ष, में प्रति पौधा औसत 97.00 किग्रा फल उत्पादन दर्ज किया गया।

सीएचईएसबी-21 (आईसी-0629386) : इसमें बीज कोष्ठ की व्यवस्था अत्यधिक केन्द्रिक, कांटेदार, सुगंधरहित और पकने पर फल नीबू के रंग जैसे विशिष्ट पहचान है। दसवें वर्ष में प्रति पौधे औसत उपज 91.50 किग्रा फल उत्पादन दर्ज किया गया। यह मध्यम परिपक्व किस्म (अप्रैल का तीसरा सप्ताह) है।

सीएचईएसबी-27 (आईसी-0629387) : इसमें व्यवस्थित चंदवा (छत्र), अत्यधिक फलन और गहरा पीला रंग इसकी विशेषता है। दसवें वर्ष में प्रति पौधे औसत उपज 105.80 किग्रा है। यह मध्यम परिपक्व किस्म (अप्रैल का चौथा सप्ताह) है।

सीएचईएसबी-29 (आईसी-0629388) : यह मध्यम परिपक्व किस्म (अप्रैल का चौथा सप्ताह) है। व्यवस्थित चंदवा (छत्र), अत्यधिक फलन और गहरा पीला रंग इसकी विशेषता है। सातवें वर्ष में प्रति पौधे औसत उपज 62.25 किग्रा अत्यधिक फलन देता है।

किसानों हेतु कार्यक्रम और विस्तार गतिविधियां

(अ) मुख्यालय, बीकानेर

✦ **प्रशिक्षण**

● शुष्क बागवानी की उन्नत उत्पादन तकनीकियों पर आत्मा, हनुमानगढ़ (राज.) के किसानों को दिनांक 11–13 फरवरी, 2020 के दौरान तीन द्विसिय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **(एस.आर.मीना, आर.सी.बलाई और डी.के.समादिया)।**

संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) पी.एल.सरोज एवं वैज्ञानिक, हनुमानगढ़ (आत्मा) के किसानों के साथ चर्चा करते हुए।

● आत्मा, गुरुग्राम (हरियाणा) के किसानों को दिनांक 4–6 मार्च, 2020 के दौरान शुष्क क्षेत्रीय फलों एवं सब्जियों की उन्नत उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण दिया गया **(एस.आर.मीना और आर.सी.बलाई)।**

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (एफएलडी)

● इस अवधि के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने शुष्क क्षेत्रीय सब्जियों की उन्नत उत्पादन तकनीकों पर बीकानेर जिले के विभिन्न गांवों में 4 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन और 32 विधि प्रदर्शन आयोजित किये। इस दौरान विभिन्न स्थानों से आए किसानों को संस्थान का भ्रमण करवाकर उन्हें संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों की जानकारी दी गयी।

तकनिकी प्रदर्शनियों का आयोजन

● राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, तबीजी, अजमेर द्वारा दिनांक 15–16 फरवरी, 2020 के दौरान आयोजित किसान मेले में संस्थान की प्रदर्शनी लगाई गयी।

ᵇ कृषि विज्ञान केन्द्र, गुड़ामालानी, बाडमेर–।।, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा दिनांक 24.02.2020 को आयोजित किसान मेले में भाग लेकर संस्थान की तकनीकियों की प्रदर्शनी लगायी जिसका उद्घाटन भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री श्री कैलाश जी चौधरी ने किया था।

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री श्री कैलाश चौधरी गुड़ामालानी में आयोजित किसान मेले के दौरान संस्थान की प्रदर्शनी का अवलोकन एवं वैज्ञानिकों से उन्नत तकनीकियों के बारे में चर्चा करते हुए।

अन्य विस्तार गतिविधियां

● इस अवधि के दौरान 200 से अधिक किसानों, विद्यार्थियों, खेतीहरों, विषय विशेषज्ञों, सुपरवाइजर, गणमान्य व्यक्तियों/एनजीओ, आदि को संस्थान का भ्रमण कराया गया।

● परिसर/परिसर से बाहर 15 वैज्ञानिकों–किसानों की आपसी चर्चा बैठकों का आयोजन किया गया।

● महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में महिलाओं को शुष्क बागवानी की उन्नत तकनीकियों के बारे में आपसी चर्चा/विचार विमर्श, प्रशिक्षण दिया गया।

● मेरा गांव मेरा गौरव योजना में किसान लाभार्थ कार्यक्रम आयोजित किए गये।

● विभिन्न विस्तार गतिविधियों के दौरान किसानों को 500 से अधिक तकनीकी साहित्यों का वितरण किया गया। **(एस.आर.मीना, डी.के. समादिया, डी. के. सरोलिया और आर.सी.बलाई)**

(ब) क्षेत्रीय केन्द्र, वेजलपुर (गुजरात)

● एससीएसपी योजना के अंतर्गत 10–13 मार्च, 2020 के दौरान गुजरात के अनुसूचित जाति के किसानों के लिए पौधशाला और बगीचा प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

● आत्मा, पंचमहल (गुजरात) द्वारा आयोजित किसान मेला एवं प्रदर्शनी में, 21–22 जनवरी 2020 को केन्द्र की उन्नत तकनीकियां प्रदर्शित की गयी।

● केन्द्र ने महात्मा गांधी आश्रम, गांधीनगर में भाकृअनुप–सीपीआरआई, शिमला द्वारा 28–31 जनवरी, 2020 के दौरान आयोजित वैश्विक आलू कॉन्क्लेव–2020 में भाग लेकर प्रदर्शनी लगायी।

(स) कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचमहल, वेजलपुर (गुजरात)

इस अवधि के दौरान कृविके द्वारा 17 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, 6 प्रक्षेत्र प्रयोग तथा 24 विधि प्रदर्शन आयोजित किये गये। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों पर कुल 17 किसान प्रशिक्षण भी आयोजित किये गये।

संस्थान द्वारा कोविड-19 की लॉकडाउन अवधि (24.03.2020-30.06.2020) के दौरान की गयी गतिविधियां

● कोविड–19 महामारी के फैलाव को रोकने के लिए संस्थान द्वारा उठाए गये प्रमुख कदम–

कोविड–19 से बचाव के लिए संस्थान में सेनेटाईजेशन और कार्मिकों द्वारा सामाजिक दूरी रखते हुए विभिन्न कार्यों का निर्वाहन किया गया।

भारत सरकार के दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए सभी कार्मिकों ने अपने–अपने मोबाइल फोन में "आरोग्य सेतु एप" डाउनलोड कर उसका लाभ लिया।

● **जीवन यापन हेतु सहयोग:** लोकडाउन के दौरान संस्थान में कार्यरत खेतीहर मजदूरों को उनके जीवनयापन हेतु विभिन्न सामग्री का वितरण संस्थान एवं इसके कार्मिकों द्वारा किया गया। इसमें सब्जी, अन्य दैनिक आवश्यक सामग्री और फल आदि का वितरण शामिल है।

● **न्यूनतम दरों पर ताजा फल एवं सब्जियों का विक्रय :** संस्थान द्वारा इस दौरान कार्मिकों, खेतीहर मजदूरों को न्यूनतम दरों पर ताजा फल एवं सब्जियों का विक्रय किया।

● **कोविड-19 के खतरों के प्रति जागरूक करना:** संस्थान ने विभिन्न संचार माध्यमों एवं अन्य तरीकों से ग्रामीणों एवं किसानों को कोविड–19 महामारी के खतरों की जानकारी देते हुए उन्हें इसके प्रति जागरूक किया।

● **किसानों को बीज व अन्य सामग्री का वितरण :** अनुसूचित जाति के किसानों को एससीएसपी योजना के अंतर्गत खाद, बीज, उर्वक, किसानोंपयोगी साहित्य, आदि का वितरण करते हुए कोविड–19 के प्रति सचेत रहने का संदेश दिया।

● **किसान परामर्श संदेश:** संस्थान ने लॉकडाउन के दौरान किसानों को शुष्क बागवानी से सबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएं और परामर्श देने हेतु एक ''मोबाइल वाट्सअप ग्रुप'' बनाया और इसके माध्यम से समय–समय पर परामर्श देते हुए बागवानी क्रियाएं करने हेतु कहा गया।

संस्थान में टिड्डीदल का आक्रमण और उनसे बचाव के उपाय

संस्थान में दिनांक 20.05.2020, 01.06.2020, 21.06.2020 और 29.06.2020 को अति विशाल टिड्डी दल ने आक्रमण किया। टिड्डियों ने प्रायोगिक प्रखण्डों, संस्थान परिसर और आस–पास के क्षेत्रों में कई बार आक्रमण किया। यद्धपि, संस्थान के, वैज्ञानिक, प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों सहित सभी कर्मचारियों, एसआरएफ, वाईपी और प्रक्षेत्र सहायकों ने कड़ी मेहनत की और परिसर से घातक टिड्डियों के झुंड को भगाकर संस्थान को बड़े नुकसान से बचाया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट बनाकर राज्य सरकार एवं परिषद् को भेजी गयी।

मानव संसाधन विकास कार्यक्रम/गतिविधियां

● ''जैविक उत्पादक'' पर 21 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 16 जनवरी से 5 फरवरी, 2020 के दौरान किया गया। (पी. एल. सरोज, बी.डी.शर्मा, आर.सी. बलाई और बी.आर.चौधरी)

● ''गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादक'' पर 21 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 20 फरवरी से 11 मार्च, 2020 के दौरान किया गया (पी. एल.सरोज, बी.आर.चौधरी और ए. के. वर्मा)।

● संस्थान में नव पदस्थापित वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 21 मई से 19 जून, 2020 तक अभिस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत कार्यक्रमों का आयोजन :

संस्थान में अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें 25.01.2020 को गीगासर गांव के 53, 13.03.2020 को 465 आरडी ब्लॉक (छतरगढ–बीकानेर) के 28, 24.06.2020 को संस्थान प्रांगण में तखतपुरा गांव (छतरगढ–बीकानेर) के 25 अनुसूचित जाति के किसानों को शुष्क बागवानी की उन्नत तकनीकियों पर प्रशिक्षण और विभिन्न सब्जी फसलों के उन्नत बीज, खाद–उर्वरक, दुग्ध केन, तकनीकी साहित्य आदि सामग्री का वितरण किया गया (पी. एल. सरोज, एवं एसएसीएसपी समिति)।

संस्थान में दिनांक 24 फरवरी से 01 मार्च, 2020 तक और 13–19 मार्च 2020 तक अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए शुष्क बागवानी फलों के मूल्य संवर्धन और पौधशाला प्रबंधन पर महिला सशक्तिकरण हेतु 7–7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया **(अनीता मीणा, डी. के.सरोलिया, आर. के. मीणा और वी.आर.रेड्डी)।**

दिन/सप्ताह/पखवाड़ा का आयोजन

● संस्थान में 06 फरवरी, 2020 को उन्नत सब्जी बीज वितरण दिवस का आयोजन किया गया।

● संस्थान में दिनांक 21.06.2020 को ऑनलाईन योग दिवस मनाया गया।

महत्वपूर्ण बैठकों का आयोजन

● अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्रीय फल समन्वित अनुसंधान परियोजना के अनुसंधान वैज्ञानिक समूह की 24वीं वार्षिक बैठक, 28 फरवरी से 01 मार्च, 2020 के दौरान तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर में आयोजित की गयी।

बैठक के दौरान मंचासीन अतिथिगण

● दिनांक 18.01.2020 को एसकेएनएयू, जोबनेर, जयपुर में ''शुष्क क्षेत्रीय फलों में सुधार'' पर एक दिवसीय मंथन–सत्र का आयोजन किया गया।

● संस्थान की अनुसंधान परामर्श समिति की बैठक 3–4 जनवरी, 2020 के दौरान आयोजित की गयी।

● संस्थान तकनीकी प्रबंधन समिति की बैठक 20 फरवरी, 2020 के दौरान आयोजित की गयी।

● विशिष्टता, एकरूपता और स्थिरता (डस) क्रियाकलापों की निगरानी दल की बैठक दिनांक 3–4 मार्च, .2020 को संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) पी. एल. सरोज की अध्यक्षता में आयोजित की गयी।

पुरस्कार एवं सम्मान

● प्रो. (डॉ.) पी. एल. सरोज, निदेशक, भाकृअनुप–केशुबासं, बीकानेर को उनके शुष्क बागवानी के क्षेत्र में किए गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए 'लाइफटाईम एचीवमेंट' अवार्ड भारतीय बागवानी सम्मेलन–2020 के दौरान भाकृअनुप के पूर्व उप महानिदेशक बागवानी, डॉ. जी. कल्लू द्वारा प्रदान किया गया।

● डॉ. बी. आर. चौधरी, वरि. वैज्ञानिक (सब्जी) को बागवानी अनुसंधान एवं विकास समिति, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा फैलो–2020 प्रदान किया गया।

● संस्थान की तकनीकी प्रदर्शनी को भाकृअनुप–एनआरसीएसएस, तबीजी, अजमेर द्वारा दिनांक 15–16 फरवरी, 2020 के दौरान आयोजित किसान मेले में 'सर्वश्रेष्ठ तकनीकी प्रदर्शनी' का पुरस्कार दिया गया।

● संस्थान की तकनीकी प्रदर्शनी को कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा कृविके, गुड़ामालानी, बाडमेर में 24 फरवरी, 2020 को आयोजित किसान मेले के दौरान 'सर्वश्रेष्ठ तकनीकी प्रदर्शनी' का पुरस्कार दिया गया।

● संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, वेजलपुर (गुजरात) की तकनीकी प्रदर्शनी को आत्मा, पंचमहल, गुजरात द्वारा 21–22 जनवरी, 2020 के दौरान आयोजित किसान मेले में 'सर्वश्रेष्ठ तकनीकी प्रदर्शनी' का प्रथम पुरस्कार दिया गया।

प्रकाशक	:	प्रो. (डॉ.) पी. एल. सरोज, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजस्थान)
संकलन एवं सम्पादन	:	डॉ. शिवराम मीना, प्रधान वैज्ञानिक
	:	सुश्री राम्या श्री देवी, वैज्ञानिक
	:	श्री प्रेम प्रकाश पारीक, स.मु.तक. अधिकारी
छायाचित्रण	:	श्री संजय पाटिल, वरि. तक. अधिकारी
शब्द-सज्जा	:	श्री भोजराज खत्री, तक. अधिकारी